# कंकर से शंकर

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

आत्मा के कारण हम जीरो से हीरो हैं। आत्मा के न रहने पर हम हीरो से जीरो हो जाते हैं। खदान में पड़े हुए टुकड़े का कोई महत्त्व नहीं रहता, किन्तु जब वही पत्थर तरासकर मंदिर में प्रतिष्ठित किया जाता है तो हम उसे भगवान के रूप में पूजते हैं। कंकर से शंकर बनने का अर्थ है– पत्थर से भगवान बन जाना। कंकर से शंकर बनने का अर्थ है– अज्ञानी से ज्ञानी बन जाना। पुण्योंदय नहीं है तो इसका ज्ञान नहीं हो सकता और इसकी प्राप्ति भी नहीं हो सकती। भारत एक धर्म प्रदान देश है। भारत ने मानवता का पाठ अन्य देशों को पढ़ाया है। भारत की संस्कृति में आध्यात्मिकता का बहुत महत्व है।

पाश्चात्य देशों का आधार भौतिकता है। इसलिए हमारे और पाश्चात्य देशों के विचारों में भेद स्पष्ट है। हम लौकिक और आध्यात्मिक जगत दोनों में रहते हैं। भौतिक जगत व्यावहारिक जगत है। आध्यात्मिक जगत में बुद्धि के परे जाकर प्रज्ञा के जगत में जाना पड़ता है। आध्यात्मिकता में केवल वाईब्रेशन है। वहां शब्द नहीं है। भारत में अनेक धर्म, अनेक जातियां और अनेक भाषा–भाषी लोग रहते हैं। आध्यात्मिकता ही एक ऐसा सूत्र है जो सबको पिरोए हुए है। आध्यात्मिक स्तर पर सभी प्रकार का भेद समाप्त हो जाता है। यहां पर नानात्व समाप्त हो जाता है। केवल चेतन मन में रूपान्तरण होता है और चेतन मन में दबी हुई भावना धीरें–धीरे प्रकट होती है। जैसा–जैसा वाईब्रेशन होता है वैसा–वैसा प्रभाव पड़ता है। कार्मण शरीर में कर्मों का उदय होता है। लेश्याओं में कर्म, रज रंजित होकर दिखाई देता है। लेश्चा का सम्बन्ध भावों से है। जैसे भाव रहते हैं वैसा ही आभामण्डल बन जाता है।

जब आंख खोलकर देखते हैं तो बाह्य जगत दिखायी देता है और जब आंख मूंदकर देखते हैं तो अन्तर जगत दिखायी देता है। पांच इन्द्रियां मनुष्य को बाह्य जगत का दर्शन कराती हैं। बाह्य जगत में मनुष्य अधिक जीता है। भीतरी जगत का वह स्पर्श ही नहीं करता। भारतीय साहित्य में, संस्कृति में भीतरी जगत में जीने की कल्पना की गई है। वहां बाह्य जगत को महत्व नहीं दिया गया है। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य अध्यात्म जगत से जुड़ा हुआ है। भीतरी और

बाहरी जगत में सन्तुलन होना आवश्यक है। सन्तुलन के बिना जीवन अधूरा है। मानव ही सम्पूर्ण प्राणियों में श्रेष्ठ है। विवेक एक ऐसा तत्व है जो सभी प्राणियों से मनुष्य को अलग करता है। भारतीय दर्शन में बाह्य जगत को मिथ्या और आन्तरिक जगत को सत्य कहा गया है। ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या कहकर जगत के मिथ्यात्व को प्रकट किया गया है। भगवान् शंकाराचार्य ने केवल एक ही तत्व को सत्य कहा। वह तत्व है आत्मा। बाह्य जगत क्षणिक है। आज है कल नहीं रहेगा। क्षण–क्षण परिवर्तनशील है।

बाह्य जगत पौद्गलिक है। रूप, रस, गंध, स्पर्श से युक्त है। यह जगत निस्सार है। इसमें तत्व को खोजना बेकार है। यह व्यवहार तक सीमित है। जैसे ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी की आवश्यकता होती है, किन्तु ऊपर चढ़ जाने के बाद सीढ़ी बेकार हो जाती है, उसी तरह यह जगत है। आत्मज्ञान हो जाने पर यह बाह्य जगत मिथ्या प्रतीत होने लगता है। ज्ञाता द्रष्टा भाव से इस बाह्य जगत में रहना चाहिए। जैसे–जैसे अनासक्त भाव बढ़ेगा वैसे–वैसे यह जगत मिथ्या प्रतीत होने लगता है। जैसे कस्तूरी हिरन की नाभि में रहती है किन्तु उसे इसका ज्ञान नहीं रहता और वह उसकी खोज में चारों तरफ दौड़ता रहता है, यही स्थिति मनुष्य की भी है। मनुष्य अपनी आत्मा न जानकर बाहर आत्मतत्व को खोजता है।

आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। आध्यात्मिकता के ही कारण भारत को विश्वगुरु का दर्जा प्राप्त है। प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियों के मेल से जो संक्रमण आया भौतिक समृद्धि उसी का परिणाम है। हमारे देश में सर्वप्रथम आत्मचिंतन हुआ। हम कौन हैं? कहां से आये हैं? मरने के बाद यहां से आत्मा कहां जाती है। आत्मा का अस्तित्व है या नहीं इन सब विषयों पर भारतीय वाङ्मय में गम्भीर चिंतन हुआ है। भारतीय चिंतकों ने भौतिक समृद्धि को अधिक महत्व नहीं दिया। उनके विचार में धन नश्वर है। आज है कल नहीं रहेगा। इसलिए ऐसी सम्पदा को प्राप्त किया जाये, जिसका अस्तित्व त्रिकाल में वर्तमान रहता है। इसलिए भारतीय शास्त्र वेत्ताओं ने अपने चिंतन के केन्द्र में आत्मा को रखा।

उपनिषदों के एक प्रसंग के अनुसार महर्षि याज्ञवल्य की दो पत्नियां थीं– मैत्रेयी और कात्यायनी, इसमें से एक श्रेयकामी थी और दूसरी प्रेयकामी थी। अपने अंतिम समय में अपनी सम्पत्ति का बटवारा करने के लिए अपनी दोनों पत्नियों को बुलवाया और सम्पत्ति बांटने की

इच्छा की। जो अध्यात्म प्रिय थी उसने कहा कि हम उस सम्पत्ति को लेकर क्या करेंगे जो हमें शाश्वत सुख न दे सके। हमें तो ऐसी सम्पत्ति दिजिए जो जीवन नौका को पार लगा दे। किन्तु दूसरी जो भौतिक सुख चाहने वाली थी, उसने महर्षि की सम्पूर्ण सम्पत्ति प्राप्त की। भौतिक सम्पत्ति विनश्वर है और आध्यत्मिक सम्पत्ति शाश्वत। जीवन की समग्र समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझने के लिए हमें उसके दोनों पक्षों को समझना आवश्यक है।